तिब्बत में बौद्ध धर्म के उत्कर्ष का ऐतिहासिक अध्ययन

एस.के. जायसवाल*

भारत का अन्य देशों के साथ राजनीतिक और सांस्कृतिक सम्बन्ध काफी प्राचीन काल से देखने को मिलता है।[1] जिस प्रकार दक्षिण में लंका भारत के सबसे निकट है, उसी प्रकार उत्तर में तिब्बत भी भारत का निकटतम देश है।[2] यह देश प्रारम्भ से ही भारतीय सांस्कृतिक विचारधाराओं से प्रभावित रहा है। भारत में बौद्ध धर्म के उदय के फलस्वरूप बौद्ध संस्कृति का प्रभाव जहाँ एशिया के अनेक देशों तक पहुँचा, वहीं तिब्बत भी इससे अछूता न रहा और इस धर्म की किरणों से वहाँ का वातावरण प्रकाशमय हुआ। कहा जाता है कि तिब्बत में सर्वप्रथम जिस राज्य की स्थापना हुई, उसका शासक कोशल नरेश प्रसेनजित का पुत्र था। उसी की तीसरी पीढ़ी में तिब्बत में बौद्ध धर्म को प्रतिष्ठित करने का गौरव प्राप्त किया।[3] इस प्रकार तिब्बत में बौद्ध धर्म की स्थापना काफी पहले से स्वीकार की जा सकती है। वहाँ के प्राचीन मठ-मन्दिर इस बात के ज्वलंत उदाहरण हैं कि वहाँ बौद्ध धर्म का प्रवेश काफी पहले हो चुका था। ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर यह स्वीकार किया जाता है कि सातवीं सदी ईसवी में वहाँ सोङ-वत्सन्-स्गम-पो[4] ने एक शक्तिशाली राज्य स्थापित किया। उसने तिब्बती साम्राज्य की सीमा दक्षिण में हिमालय की तराई से उत्तर में थियानशान पर्वतमाला तक विस्तृत की।[5] उसके द्वारा विजित प्रदेशों पर उस समय बौद्ध धर्म का विस्तार था जिसके फलस्वरूप तिब्बत में बौद्ध धर्म का प्रचार काफी तीव्र गति से हुआ। सोङ-वत्सन्-स्गम-पो ने चीनी एवं नेपाली राजकुमारियों से वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित किए। दोनों ही धर्मनिष्ठ बौद्ध थीं और इनके प्रभाव के कारण राजा ने भी बौद्ध धर्म अपना लिया।[6] इसी के परिणामस्वरूप बौद्ध धर्म तिब्बत में राजधर्म बन गया।

सोङ-वत्सन्-स्गम-पो ने अनेक बौद्ध विहारों का निर्माण करवाकर अनेक बौद्ध ग्रन्थों का तिब्बती भाषा में अनुवाद करवाया था।

Scanned with CamScanner

उसने भारतीय वर्णमाला और लिपि सीखने तथा तिब्बती भाषा के लिए लिपि तैयार करने के उद्देश्य से तिब्बत के एक मंत्री सम्भोट को भारत भेजा। उसने भारत में रहकर संस्कृत भाषा तथा बौद्ध धर्म का अध्ययन किया। इसके साथ ही उसने तिब्बती भाषा की विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए तिब्बत के लिए तीस अक्षरों वाली नयी लिपि तैयार की। तिब्बती नरेश खोड-वत्सन्-स्गम-पो ने स्वयं इस लिपि को सीखकर बौद्ध धर्म के ग्रन्थों का अध्ययन किया। इस प्रकार सम्भोट के प्रयासों के फलस्वरूप ही बौद्ध ग्रन्थों का तिब्बती भाषा में अनुवाद का कार्य प्रारम्भ हो गया।[7] इससे बौद्ध धर्म के प्रसारण में काफी सहायता मिली। उसने 16 नैतिक शिक्षा सम्बन्धी सूत्रों को भी लिखवाकर जनता तक पहुँचाने का प्रयास किया।[8] बौद्ध धर्म के लिए खोड-वत्सन्-स्गम-पो द्वारा किए गए कार्यों के कारण बाद के तिब्बती बौद्ध उसे बोधिसत्व अवलोकित का अवतार मानने लगे और उसकी नेपाली रानी को भृकुटी तथा चीनी रानी को तारा का अवतार समझा जाने लगा।[9]

तिब्बत का एक नरेश रवी-खोड-ल्दे-वत्सन् जिसने 755 से 797 ई० तक राज्य किया, तिब्बत में बौद्ध धर्म का उदार आश्रयदाता बना और इस धर्म के उत्कर्ष हेतु उसने सराहनीय कार्य किए। बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार में उसका वही स्थान माना जाता है जो भारतीय इतिहास में अशोक का है। उसने तिब्बत की सीमाओं को पामीर पहाड़ियों के पार अरब और तुर्किस्तान तक विस्तृत करते हुए नेपाल पर विजय प्राप्त की और चीन के पश्चिमी भाग पर भी अपना अधिकार स्थापित किया। भारत के पूर्वी भागों पर भी उसका प्रभुत्व स्थापित हुआ। कहा जाता है कि उसके आक्रमण से कश्मीर नरेश ललितादित्य और कन्नौज नरेश यशोवर्मन् भी परेशान हो गए थे।[10] चीन और भारत में बौद्ध धर्म इस समय भी अपने उत्कर्ष पर था और इसका प्रभाव तिब्बत पर पड़ना स्वाभाविक था। इस धर्म के प्रचार हेतु नालन्दा विश्वविद्यालय के तत्कालीन प्रसिद्ध बौद्ध भिक्षु तथा विद्वान् शान्तिरक्षित को तिब्बत में आमंत्रित किया गया। उस समय उनकी आयु 75 वर्ष की थी। इस वृद्धावस्था में दुर्गम पर्वतीय मार्ग की कठिनाइयों को झेलना उन्होंने केवल इसलिए स्वीकार किया कि धर्म रक्षा का प्रश्न जीवन रक्षा के बढ़कर था। राजा ने शान्तिरक्षित को तिब्बत का प्रधान धर्माधिकारी और महापुरोहित नियुक्त किया और अपनी राजधानी लासा से लगभग 55

Scanned with CamScanner

ठिस्रोंगदेत्सन् द्वारा समये नामक एक बौद्ध विहार निर्मित कराया। तिब्बत में यह प्रथम विहार था जिसमें बैठकर शताब्दियों बाद तक अनेक बौद्धाचार्यों ने धर्म और साहित्य के उत्थान में उल्लेखनीय कार्य किए। उसके बाद आचार्य की प्रेरणा से वहाँ के राजा ने समस्त तिब्बत में एक ओर बौद्ध मठों के निर्माण का कार्य आरम्भ किया और दूसरी ओर अपने देशवासियों को बौद्ध धर्म में दीक्षित होने के लिए प्रेरित किया। इस कार्य के लिए नालन्दा से बारह भिक्षु बुलाये गये थे।[11] इस भिक्षुसंघ के द्वारा तिब्बत में बौद्ध धर्म का न केवल उत्कर्ष हुआ, बल्कि इस धर्म की विधिवत स्थापना हुई। शान्तिरक्षित को उनके धर्म प्रचार के कार्य में प्रसिद्ध आचार्य पद्मसम्भव से अत्याधिक सहयोग और सहायता प्राप्त हुई। **समन्यास** नामक स्थान पर 749 ई0 में उन्होंने एक विहार का निर्माण कराया जो मगध के ओदन्तपुर विहार के समान निर्मित हुआ था। पद्मसम्भव ने बौद्ध धार्मिक ग्रन्थों का संस्कृत से तिब्बती में अनुवाद कार्य कराकर तिब्बत में एक तरह से साहित्यिक और धार्मिक चेतना जागृत की।[12] इस प्रकार आठवीं शताब्दी ई0 के मध्य भाग में तिब्बत में बौद्ध धर्म की काफी प्रगति हुई और इसका बहुत कुछ श्रेय पद्मसम्भव को जाता है जिसे तिब्बत में गुरु या महागुरु की उपाधि से विभूषित किया गया। पद्मसम्भव के तिब्बती प्रवासकाल में तिब्बत में बौद्ध धर्म के प्रचार हेतु हवशान के नेतृत्व में चीन से बौद्ध प्रचारकों का एक मण्डल आया। उसने भारतीय बौद्ध धर्म के विपरीत अन्य सिद्धान्तों का प्रचार शुरू किया। इसके परिणामस्वरूप तिब्बत नरेश ने मगध से प्रसिद्ध बौद्ध विद्वान् कमलशील को तिब्बत में आमंत्रित किया। इस आचार्य के तिब्बत पहुँचने पर राज्य की ओर से चीनी भिक्षुओं को चुनौती दी गयी।[13] आचार्य कमलशील ने इस गुट को शास्त्रार्थ में पराजित किया जिसके फलस्वरूप आत्मग्लानि से वशीभूत चीनी धर्माचार्य क्रूरता पर उतरते हुए आचार्य कमलशील की हत्या करवा दी। आचार्य कमलशील ने अपना जीवन देकर तिब्बत में बौद्ध धर्म की रक्षा की। तिब्बतीय इतिहास में उनकी यह आत्माहुति अमर है।[14] इस घटना से दुखी राजा त्रत्सन ने भी 69 वर्ष की आयु में अपना शरीर त्याग दिया। अपनी शक्ति और विद्वता के कारण तिब्बत के इतिहास में इस राजा को **'तिब्बती मंजुश्री'** के नाम से याद किया जाता है।

Scanned with CamScanner

तिब्बत में बौद्ध धर्म के सन्दर्भ में आचार्य शान्तिरक्षित, पद्मसम्भव एवं कमलशील के योगदान को इस प्रकार देखा जा सकता है-

1. तीनों आचार्यों के अथक प्रयासों का ही परिणाम था कि तिब्बत में पुर्नजागरण का युग शुरू हुआ और शान्ति के अग्रदूत बनकर तीनों ने वहाँ के लोगों को नया जीवन देते हुए उनमें नयी चेतना का संचार किया। इसके बाद ही तिब्बत प्रगति के पथ पर अग्रसर होता गया और बौद्ध धर्म का निरन्तर विकास होता रहा।
2. तीनों के प्रयासों का ही परिणाम था कि बौद्ध धर्म माध्यमिक स्वतंत्र नाम से प्रसिद्ध हुआ। इसके बाद ही धर्मकीर्ति, विमलमित्र, बुद्धगुप्त और शान्तिगर्भ नामक भारतीय बौद्ध विद्वान तिब्बत गये और वहाँ के विभिन्न प्रदेशों में बौद्ध धर्म प्रसारित किया। उन्होंने तन्त्रवाद को भी प्रचलित करते हुए आध्यात्म विद्या की शिक्षा से लोगों को प्रेरित किया।
3. आचार्यों ने अपने तिब्बती शिष्यों की सहायता से अनेक बौद्ध ग्रन्थों का तिब्बती भाषा में अनुवाद करने में सफलता प्राप्त की। इस समय जितना अनुवाद कार्य तिब्बत में हुआ, उतना कभी नहीं हुआ।
4. पद्मसम्भव द्वारा स्थापित किया हुआ विहार एक शिक्षा केन्द्र के रूप में परिवर्तित हो गया और यही लामों संघ का प्रमुख केन्द्र भी रहा।
5. आचार्यों ने अपनी विद्वता प्रदर्शित करते हुए तिब्बत में वामपन्थी चीनी आचार्यों द्वारा पुनः प्रचलित बोन धर्म को सदा के लिए समाप्त कर दिया और वहाँ के राजा को भी इस धर्म की त्रुटियों से अवगत कराते हुए बौद्ध धर्म की विशेषताओं के आधार पर उनका झुकाव इस ओर करने में सफलता प्राप्त की।

आगे आने वाले समय में ठि-त्दे-स्रान-पो (804-816 ई0) नामक तिब्बती शासक ने संस्कृत शब्द के लिए तिब्बती भाषा के शब्दों को प्रयोग में लाने के ध्येय से एक सूची बनाने और अनुवाद करते समय इन शब्दों के प्रयोग पर बल दिया। बौद्ध ग्रन्थों का इस पद्धति से अनुवाद कराने के लिए कई भारतीय विद्वानों को तिब्बत आने के लिए आमंत्रित किया गया।

Scanned with CamScanner

इनमें जितमित्र, सुरेन्द्रबोधि, शीलेन्द्रबोधि, दानशील और बोधिभद्र के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इन विद्वानों द्वारा अनेक बौद्ध ग्रन्थों का तिब्बती भाषा में अनुवाद किया गया।

बौद्ध धर्म का अधिक विकास और प्रचार करने के लिए तिब्बत के एक सम्राट ये-शेस-ओद के अत्याधिक अनुरोध पर ग्यारहवीं सदी में विक्रमशिला विश्वविद्यालय के प्रधान आचार्य दीपंकर श्रीज्ञान तिब्बत गये।[17] वहाँ उन्होंने तिब्बत के विभिन्न भागों में तेरह वर्ष तक भ्रमण करके वज्रयान बौद्ध धर्म का प्रचार किया, बौद्ध धर्म में सुधार किये और लगभग 200 ग्रन्थों की रचना की। उन्हीं के प्रयासों का ही परिणाम था कि तिब्बती में बौद्ध धर्म का उत्कर्ष इस समय भी रहा और कोई भी मत एवं सम्प्रदाय उसके सम्मुख नहीं टिक सका। तिब्बती ग्रन्थों में उनको अतिश और अतिशया की संज्ञा से विभूषित किया गया। तिब्बती भाषा में आचार्य दीपंकर के जो स्वतंत्र और व्याख्या ग्रन्थ उपलब्ध हैं उनमें **माध्यमिक रत्न प्रदीप, माध्यमिक हृदय कारिका, माध्यमिक हृदय कारिका वृत्ति, माध्यमिक कार्य-संग्रह, माध्यमिक अवघाट, बोधिपथ प्रदीप, बोधिपथ-प्रदीप-पंजिका, महासूत्र समुच्य, पंचस्कन्ध प्रकरण** आदि प्रमुख हैं।

ग्यारहवीं सदी में तिब्बत के नरेशों और बंगाल के नरेशों के परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध थे। इसीकारण बंगाल के पाल नरेशों ने तिब्बत में बौद्ध धर्म के सुधार हेतु सहायता प्रदान की। तिब्बत के बौद्ध भिक्षु और विद्वान् विक्रमशिला में अध्ययन हेतु आने लगे और भारतीय भिक्षु तिब्बत जाने लगे। उच्च अध्ययन हेतु यह विश्वविद्यालय तिब्बतवासियों की पहली पसन्द था।[18] पालयुग में निश्चित रूप से दीपंकर अतीश के तिब्बत जाने से वहाँ बौद्ध धर्म को काफी बल मिला।[19] इसी समय तिब्बत जाने वाले अन्य भारतीय विद्वानों में पण्डित गयाधर, स्मृतिज्ञान कीर्ति, विभूतिचन्द्र, सुनयश्री के नाम भी विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं जिन्होंने बौद्ध ग्रन्थों के तिब्बती अनुवाद में विशेष सहायता पहुँचाई और बौद्ध धर्म के विकास में अपना पूरा योगदान प्रदान किया।

जिस तरह तिब्बत में बौद्ध धर्म के प्रचार और प्रसार में भारत का उल्लेखनीय योगदान रहा, उसी प्रकार वहाँ की कला पर भी भारतीय प्रभाव दृष्टिगोचर हुआ। वहाँ की कला स्पष्टतः बौद्ध धर्म से सम्बन्धित है और भारतीय संस्कृति की उस पर अमिट छाप है।[20] पाल नरेश धर्मपाल के

Scanned with CamScanner

शासन काल में धामिन और चित्तपाली नामक दो कलाकार अपनी कलापूर्ण निपुणता के कारण विश्वविख्यात थे। तिब्बत की कला पर इन कलाकारों की कला का प्रभाव पड़ा और बुद्धजी के जीवन से सम्बन्धित विभिन्न घटनायें, जातक कथाओं का बड़ा ही मार्मिक चित्रण वहाँ के कलाकारों ने अपनी कला पर उतारा। वहाँ जिन बुद्धों की मूर्तियों का निर्माण हुआ उनमें दीपांकर, काश्यप, गौतम, मैत्रेय एवं भैषज्य बुद्ध हैं। इन पांच मानुषि बुद्धों ने अपने पूर्व जन्म में बोधिसत्व के रूप में ज्ञान अर्जित किया था। इन्हें भिक्षु वस्त्र में चित्रित किया गया है और आभूषणों से रहित दिखाया गया है। तिब्बती कला में तारा को भी उल्लेखनीय स्थान प्राप्त है। तारा को एक महिला की तरह बैठे दिखाया गया है और उनके हाथ में एक कमल है। चित्रकला के अन्तर्गत भी वहाँ बौद्ध धर्म से सम्बन्धित बुद्ध, बोधिसत्व और तांत्रिकों के चित्र वहाँ के चित्रकला के प्रमुख विषय रहे हैं। यह चित्र दीवारों, कपड़ों तथा रेशम एवं लकड़ियों पर चित्रित किये जाते थे। बौद्ध विहारों को भी अनेक चित्रों से अलंकृत किया जाता था।

तिब्बत का बौद्ध धर्म लामा मत[19] के नाम से प्रसिद्ध है। इसमें भारतीय बौद्ध धर्म के साथ-साथ स्थानीय कल्पों और राक्षसीय आत्माओं को भी स्थान प्राप्त हुआ। लामा मत द्वारा समस्त बुद्धों और बोधिसत्वों को अपना लिया गया। तिब्बत का बौद्ध धर्म, वास्तव में बहुत ही लचीला था जिसमें सभी स्थानीय तथा भारतीय धार्मिक प्रवृत्तियों को यथाक्रम स्थान मिला। तिब्बत की भाषा, लिपि, व्याकरण, साहित्य, कला और धर्म भारत में प्रसारित बौद्ध धर्म के परिणाम थे। यह कहना गलत न होगा कि बौद्ध धर्म के माध्यम से तिब्बतियों को सभ्यता एवं संस्कृति की शिक्षा देने में भारत का बहुत बड़ा हाथ रहा है।[20]

सन्दर्भ एवं टिप्पणियाँ

1. राम प्रसाद त्रिपाठी, **विश्व इतिहास**, लखनऊ, 1988, पृ0213
2. तिब्बत विश्व के सबसे ऊँचे भू-भाग पर अवस्थित देश है। इस निकटतम देशों में भारत के अलावा चीन, मंगोलिया, तुर्किस्तान, वर्मा, नेपाल, सिक्कम और भूटान आदि देश हैं। रूस, अफगानिस्तान एवं पाकिस्तान भी इसके पड़ोसी देश हैं।

Scanned with CamScanner

3. दृष्टव्य वाचस्पति गैरोला, **भारत के उत्तर पूर्व सीमान्त देश**, प्रयाग, 1968, पृ021

4. तिब्बत के प्रथम शासक का नाम न्याँ-ट्री-चेम्पो बताया जाता है। उस समय तिब्बत में बोन धर्म का प्रचलन था। अट्ठाइसवें राजा ल्हा-थो-री-न्येन के शासन काल में तिब्बत में बौद्ध धर्म पूर्णरूप से प्रतिष्ठित हो गया। तत्पश्चात् चार राजाओं के शासन काल में बौद्ध धर्म का विस्तार धीरे-धीरे होता गया और तैंतीसवें राजा स्रोङ-त्सन्-स्गम-पो के शासन काल में बौद्ध धर्म का विकास काफी तेजी से हुआ।

5. सत्यकेतु विद्यालंकार, **मध्य एशिया तथा चीन में भारतीय संस्कृति**, मसूरी, 1980, पृ0200

6. दृष्टव्य ए0के0 नारायण (सम्पा0) **स्टडीज इन हिस्ट्री ऑफ् बुद्धिज्म**, दिल्ली, 2010, पृ0365-366 दृष्टव्य आर0सी0 मजूमदार, **श्रेण्य युग**, दिल्ली, 1984,पृ0701. नेपाल की राजकुमारी ख्रिपुन् जब तिब्बत गयी तो अपने साथ अक्षोभ्य मैत्रेय की चन्दन प्रतिमा तथा तारादेवी की मूर्तियाँ ले गयी थी। इसी तरह चीनी राजकन्या कोङ्जो अपने साथ शाक्यमुनि बुद्ध की प्रतिमा ले गयी थी। यह प्रतिमा भारत से चीन गयी थी और इसे प्रसिद्ध भारतीय शिल्पी विश्वकर्मा ने बनाया था। नेपाल की कन्या जिन प्रतिमाओं को ले गयी थी, वे ल्हासा के झोखङ मठ में और चीनी राजकन्या द्वारा लाई गयी बुद्ध प्रतिमा ल्हासा के रिम्पोछे मन्दिर में स्थापित की गयी थी जो आज तक वहाँ वर्तमान हैं। दृष्टव्य वाचस्पति गैरोला, **पूर्वनिर्दिष्ट**, पृ023

7. दृष्टव्य आर0सी0 मजूमदार, **पूर्वनिर्दिष्ट**, पृ0701. दलाई लामा ने **'मेरा देश मेरे देशवासी'** नामक पुस्तक में स्वीकार किया है कि तिब्बत की वर्णमाला संस्कृत से ली गयी है और बौद्ध धर्म के कारण ही ऐसा सम्भव हो सका था।

8. दृष्टव्य बैजनाथ पुरी, **मध्य एशिया में भारतीय संस्कृति**, लखनऊ, 1981, पृ0262

Scanned with CamScanner

9. दृष्टव्य स्टेफन बेयर (Stephan Beyer), **दि कल्ट ऑफ् तारा: मैजिक एण्ड रिचुवल इन तिब्बत**, कैलिफोर्निया प्रेस, 1973, पृ0542, सत्यकेतु विद्यालंकार, **पूर्वनिर्दिष्ट**, पृ0201

10. दृष्टव्य नीलकंठ शास्त्री, **फॉरेन नोटिसेज ऑफ् साउथ इण्डिया**, मद्रास, 1939, पृ0117

11. दृष्टव्य वाचस्पति गेरोला, **पूर्वनिर्दिष्ट**, पृ033. इन भिक्षुओं में वैरोचन का नाम प्रमुखता से लिया जाता है। उन्हीं के प्रयासों से तिब्बत में पीले वस्त्रों वाले भिक्षुओं के सम्प्रदाय में वृद्धि होने लगी थी। इन भिक्षुओं को लोचव नाम दिया गया और वे दो या इससे अधिक भाषाओं के ज्ञाता थे। इनमें लुई-वान-पो (Lui-Wan-Po), सगोर वैरोचन रिन्छेन छोग (Rinchchen-Chhog), येशे-वान-पो (Yese-Wan-Po), कचोग-शान (Kachog-Shan) आदि ने सूत्र, तंत्र ध्यान से सम्बन्धित ग्रन्थों का संस्कृत से तिब्बती में अनुवाद किया था। दृष्टव्य बैजनाथ पुरी, **पूर्वनिर्दिष्ट**, पृ0269

12. पी0एन0 चोपड़ा, बी0एन0 पुरी, एम0एन0 दास, **ए सोशल, कल्चरल एण्ड इकनामिक हिस्ट्री ऑफ इण्डिया, वाल्यूम-I**, मद्रास, 1990, पृ0290. आचार्य पद्मसम्भव अपने समय के अद्वितीय तर्क शास्त्री थे। कहा जाता है कि वे आचार्य शान्तिरक्षित के बहनोई थे। उन्होंने तिब्बत में चीनी 'बोन' धर्म के समर्थकों को कड़ी टक्कर दी थी। उनके सम्मान और लोकप्रियता का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि तिब्बत में ऐसा कोई घर नहीं था जहाँ उनका चित्र न टंगा हो। तिब्बत में उन्हें अवलोकितेश्वर बुद्ध के नाम से श्रद्धापूर्वक स्मरण किया जाता है।

13. चीन के अकर्मण्यवादी गुट को शास्त्रार्थ की चुनौती देने वालों में मुख्य रूप से शान्तिरक्षित के शिष्य श्रीघोष, ज्ञानेन्द्र, पद्मसम्भव और कमलशील थे। इस गुट का शास्त्रार्थ कमलशील से हुआ था जिन्होंने अपने तार्किक ढंग से गुट के विध्वंसात्मक तर्कों का खण्डन करते हुए उन्हें पराजित किया था।

14. वाचस्पति गेरोला, **पूर्वनिर्दिष्ट**, पृ018

15. दृष्टव्य सत्यकेतु विद्यालंकार, **पूर्वनिर्दिष्ट**, पृ0205-206

Scanned with CamScanner

16. दृष्टव्य वी०सी० पाण्डेय, अनूप पाण्डेय, **ए ब्रीफ हिस्ट्री ऑफ् ऐंशियन्ट इण्डिया**, जालंधर, 1998, पृ०614
17. रमा शंकर त्रिपाठी, **हिस्ट्री ऑफ ऐंशियन्ट इण्डिया**, दिल्ली, 1999 पृ०363
18. दृष्टव्य **इन्साइक्लोपीडिया ब्रिटानिका**, वाल्यूम 21, 1913
19. दृष्टव्य बैजनाथ पुरी, **पूर्वोद्धिष्ट**, पृ०277-283
20. दृष्टव्य ए०एल० बाशम, **अद्भुत भारत**, आगरा, संशोधित हिन्दी संस्करण, पृ०356

Scanned with CamScanner